साहिबाबाद क्षेत्र की राजनीतिक संस्कृतिः सत्रहवीं लोकसभा चुनावों के सन्दर्भ में

डॉ0 ललिता
सहायक प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बी0बी0 नगर, बुलन्दषहर
Email : drlalitasaroha@gmail.com

सारांश

स्वतन्त्रता ने भारतीय राजनीतिक संस्कृति के विकास के लिए नये द्वार खोले। नवीन राजनीतिक नेतृत्व ने आधुनिक भारत में राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में कुछ नये परिवर्तन किये जैसे कि सर्वव्यापक व्यस्क मताधिकार, संघीय राजनीतिक स्वरूप, ब्रिटेन तथा अमेरिका की तरह धर्म–निरपेक्ष संविधान, नागरिकों के मौलिक अधिकार, सत्ता का विकेन्द्रीकरण, सामुदायिक विकास योजनाएँ व नीति–निर्देशक तत्वों का प्रावधान आदि। इनके परिणामस्वरूप विभिन्न राजनीतिक दलों को उदय हुआ, संचार के साधनों का विस्तार किया गया ताकि लोगों का राजनीतिक समाजीकरण हो सके, जिससे जनता की अधिक से अधिक संख्या में राजनीतिक में सहभागिता बढ़ सके तथा जनता लोकतन्त्र के उत्थान और प्रतिनिधित्व के आधार पर कार्य कर सके। प्रथम लोकसभा चुनावों से सत्रहवीं (वर्तमान) लोकसभा के चुनावों में राजनीतिक दलों व मतदाताओं के राजनीतिक कार्यकलापों, निर्णयों, सहभागिता तथा रूझानों में बहुत अन्तर दिखाई देने लगा है। आज हमारा देश विश्व का सबसे बडा लोकतन्त्र है, ऐसे में हमारा समाज किस प्रकार राजनीतिक जागरूकता व चेतना' फैला रहा है, इसका ज्ञान हमें राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन करके ही हो सकता है।

मुख्य शब्दः *राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक जागरूकता, लोकतन्त्र, सहभागिता, संकल्पना, सर्वांगसमता, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक व्यवस्था।*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 03.03.2020
Approved: 28.04.2020

डॉ0 ललिता

साहिबाबाद क्षेत्र की राजनीतिक संस्कृतिः सत्रहवीं लोकसभा चुनावों के सन्दर्भ में

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. 1,
pp.074-087
Article No. 008

Online available at :
https://anubooks.com/?page_id=6391

प्रस्तावना

संस्कृति वह सेतु है जिसके माध्यम से एक जैविक प्राणी सामाजिक प्राणी बनता है। मानव व पशु में देखा जाये तो मात्र संस्कृति का ही अन्तर है। साधारण शब्दों मे कहा जा सकता है कि संस्कृति मानव जाति के रहन–सहन, आचार –विचार, भावनाओं, विश्वास विचारों तथा विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों का एक समग्र रूप है। जहॉ संस्कृति एक ओर मनुष्य की क्षमता, कुशलता जीवन के आदर्शो एवं प्रमिमानों को बताती है वहीं वह मनुष्य की विभिन्न उपलब्धियों का भी संकलन है, जिनके माध्यम से मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समाजशास्त्र में संस्कृति के लिए बोगार्डस कहते है कि ''किसी समूह के कार्य व विचार करने की सभी तरीकों का नाम ही संस्कृति है।'' हर्षकोविट्स कहते हैं – ''संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है।''[2] अर्थात् व्यक्ति सभी ओर से वातावरण से घिरा हुआ है, तो वह सभी कुछ जो प्राकृतिक नहीं है, मानव कृत्य है, वही संस्कृति है। जिसमें आचार –विचार भावनाओं से लेकर मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति की सभी मानव निर्मित वस्तुऍ व आविष्कार संस्कृति है। रूथ वैनेडिस्ट ने संस्कृति को एक प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया कि व्यक्ति की भॉति संस्कृति भी विचार व बहुत कुछ स्थिर प्रतिमान है।[3] क्रोवर व क्लकहान के शब्दों में – ''संस्कृति व्यवहार के प्रतिरूपों, स्पष्ट तथा अस्पष्ट के मिलने से बनती है, जो मानवीय समूहों को विशिष्ट उपलब्धियों के रूप में प्रतीकों के द्वारा प्राप्त किया जाता है और हस्तान्तरित होता है।''[4] अतः स्पष्ट है कि संस्कृति के बिना मनुष्य का सामाजिक प्राणी के रूप में अस्तित्व ही नहीं है। प्रागैतिहासिक युग से आज तक मनुष्य अपने अनुभवों व कौशल का आदान –प्रदान संस्कृति के माध्यम से ही कर सका है।

राजनीतिक संस्कृति की संकल्पना भी उनमें से एक ही है। यह संकल्पना किसी समाज की राजनीति व संस्कृति के परस्पर सम्बन्ध को आधार बनाकर समाज के अध्ययन में सहायता देती है। किसी भी संस्कृति में व्यक्ति के व्यवहार के तरीके, उनकी मान्यताओं, विश्वासों, सम्मान, घृणा, कर्तव्य, अर्न्तआत्मा, भौतिक उन्नति को शामिल किया जाता है। इस आधार पर कह सकते है कि संस्कृति व्यक्ति के आचरण, निर्णय लेना, चरित्र, व्यवहार आदि को प्रभावित करती है। व्यक्ति का सांस्कृतिक व्यवहार स्थायी होता है, अतः उसका प्रभाव राजनीति पर भी पड़ता है। राजनैतिक संस्कृति मूल संस्कृति के एक पक्ष का ही संकेत देती है, जिसका सम्बन्ध राजनीति से है। ओ0 पी0 गावा के अनुसार राजनीति संस्कृति के माध्यम से राजनीति के विश्लेषण के लिए संस्कृति के ज्ञानका सहारा लेना है।[5] राजनीति संस्कृति नामक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गैब्रियत आमण्ड ने 1956 में अपने लेख Comparative Political System में किया था। इसमें इन्होनें लिखा है कि ''प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था मे राजनीतिक क्रियाओं की एक विशिष्ट शैली अर्न्तनिहित है। मैंने इसे राजनीतिक संस्कृति का नाम देना ही उचित समझा।''[6] डॉ0 एस0 पी0 वर्मा के अनुसार ''राजनीतिक संस्कृति में न केवल राजनीति के प्रति दृष्टिकोण, राजनीतिक मूल्य, विचार–धारायें, राष्ट्रीय चरित्र और सांस्कृतिक प्रवृत्ति ही सम्मिलित है वरन् इसमें राजनीति की शैली, पद्धति और स्वरूप भी सम्मिलित है।[7] श्यामलाल वर्मा '' राजनीतिक संस्कृति उन प्रवृत्तियों से बनी होती है जिसकी व्यवस्था के परिचालनीय तत्वों की यथार्थ स्थिति के साथ सर्वांगसमता होती है।[8]

लुसियन पाई ने राजनीतिक संस्कृति का सम्बन्ध राजनीतिक विकास से जोडा। इसके अन्तर्गत अध्ययन किये जाने वाले विषय, राजनीति का क्षेत्र, राजनीति में साध्य व साधन का सम्बन्ध, राजनीतिक क्रियाओं के मूल्यांकन के लिए अपनायें जाने वाले मानकों तथा राजनीतिक क्रियाओं के लिए आवश्यक मूल्यों का निर्धारण है।[9] राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा ग्रेवियल आमण्ड के विचारों में देखी जा सकती है जो कि मानते है कि प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था राजनीतिक कार्यो को एक विशिष्ठ ढांचे से बांधती है अर्थात् राजनीतिक संस्कृति क्रियाशील है उसमें राजनीति का अपना एक व्यवस्थित वस्तुपरक क्षेत्र होता है। यही क्षेत्र व्यवस्था को समर्थ बनाता है। संस्थाओं को अनुशासन देता है और व्यक्तिगत कार्यो को सामाजिक संगति प्रदान करता है। एक व्यक्ति के लिए उसकी राजनीतिक संस्कृति उस व्यक्ति व उससे सम्बन्धित समूह के राजनीतिक आचरण को नियन्त्रणकारी निर्देश देती है तथा उनकी सामूहिकता को भी वह मूल्यों व तर्को की ऐसी व्यवस्थित संरचना प्रदान करती है जो संस्थाओं और संगठनों के कार्य निष्पादन में तालमेल स्थापित करती है। अतः कहा जा सकता है कि एक सामाजिक प्राणी के एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में राजनीतिक कार्यो के निष्पादन में वह जिन अनुभवों, विश्वासों, प्रतीकों व मूल्यों का उपयोग व व्यवहार करता है वह उसकी राजनीतिक संस्कृति प्रदर्शित करती है। राजनीतिक संस्कृति को दो चीजों की पैदाइश माना जा सकता है, एक ओर तो राजनीतिक व्यवस्था का इतिहास जो कि किसी विशिष्ट समूह व उससे सम्बन्धित है तथा दूसरी ओर इस समूह के व्यक्तियों के जीवन इतिहास इसमें शामिल हैं। इस प्रकार राजनीतिक संस्कृति सार्वजनिक घटनाओं व व्यक्तिगत अनुभवों मे सम्बन्धित है। राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक व्यवहार की मनोवैज्ञानिक व्याख्या और इसका माइक्रो विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस प्रकार राजनीतिक संस्कृति का प्रयास एक ऐसा प्रयास है जो कि मनोवैज्ञानिक व राजनीतिशास्त्र को जोड़ता है।[10] वह भी इस उद्देश्य से कि इस व्यवस्था द्वारा विभिन्न समाजों के दृष्टिकोणों को हम इस प्रकार माप सके कि हमारे राजनीतिक विश्लेषण मे आधुनिक मनोविज्ञान के क्रान्तिकारी निष्कर्ष और आधुनिक समाजशास्त्रीय तकनीकों के विकास का पूरा लाभ मिल सके।[11] अतः संक्षेप मे कहा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा किसी क्षेत्र विशेष की संरचना को अर्थ प्रदान करती है जिस तरह से संस्कृति का विचार सामाजिक जीवन में सामन्जस्य व समन्वय प्रस्तुत करता है। राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा का महत्व –

1. यह अवधारणा किसी समाज की राजनैतिक व्यवस्था व वहां की संस्कृति के परस्पर सम्बन्ध को आधार बनाकर समाज के अध्ययन मे सहायता करती है।
2 संस्कृति अपेक्षाकृत स्थायी होती है और इसका प्रभाव व्यक्ति के राजनैतिक व्यवहार पर भी पडता है। अतः इस आधार पर मतदाताओं की राजनीतिक व्यवस्था में सहभागिता को जाना जा सकता है।
3 राजनीतिक संस्कृति के अध्ययन से राजनीति के विश्लेषण मे समूह की संस्कृति के ज्ञान का सहारा लिया जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि संस्कृति को जानना राजनीति को जानने की अपेक्षा सरल है।

4 इसके अध्ययन से आदर्श नागरिक संस्कषति के विकास में बाधक तत्वों जैसे – साम्प्रदायिकता, जातिवाद, गुटबन्दी, व्यक्तिगत सम्बन्ध, भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार और माफिया आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

5 इसके आधार पर ही राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप को व उसके स्थायित्व के विषय को जाना जा सकता है।

17वीं लोकसभा के चुनावों की कुछ विशेषताएं

आजादी मिलने के बाद 1950 से भारत गणतन्त्र बन चुका है, 1951–52 में पहली बार लोकसभा चुनाव का आयोजन हुआ। इनके लिए महिला–पुरूष में भेदभाव किये बिना सभी व्यस्कों को मताधिकार दिया गया। 17वीं लोकसभा के गठन के लिए 543 सीटों पर भारतीय आम चुनाव देशभर में 11 अप्रैल से 19 मई 2019 के बीच 7 चरणों मे आयोजित कराये गये। 23 मई को घोषित परिणामों में भारतीय जनता पार्टी को 303 सीटों पर जीत हासिल हुई। भारत निर्वाचन आयोग के अनुसार 2014 मे पिछले आम चुनाव के बाद 84.3 मिलियन मतदाताओं की वृद्धि के साथ 900 मिलियन लोग मतदान करने के पात्र रहे, यह दुनियां का सबसे बडा चुनाव था। इसमें 46.8 करोड पुरूष मतदाता, 43.2 करोड महिला मतदाता व 38325 तृतीय लिंग मतदाता रहे। इस लोकसभा के चुनावों मे 67.11 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले।

2014 में कुल मतदान 66.40 प्रतिशत, 2009 मे 56.90 प्रतिशत तथा 2004 में 57.98 प्रतिशत रहा। महिलाओं एवं पुरूषों के बीच मतदान प्रतिशत का अन्तर 2014 में 1.4 प्रतिशत था जोकि इस बार 0.4 प्रतिशत ही रह गया।[16] इस चुनाव में सबसे बडी सैन्य तैनाती का रिकार्ड भी बना। सात चरणों के चुनावों को सम्पन्न कराने के लिए तीन लाख अर्द्धसैन्य बलों के साथ 20 लाख से अधिक राज्य पुलिस अधिकारी और होम गार्ड तैनात किये गये थे।[17] अब चुनावों में जीत के लिए मुद्दों से ज्यादा प्रचार पर भरोसा हो रहा है। प्रचार से जीत की रणनीति बनाने वाली पार्टियॉ अन्त तक जनता को यह नही बता सकी कि वे किन–किन मुद्दों पर चुनाव लड रही है। सियासी दलों की बढ़ रही संख्या और सोशल मीडिया के आगमन के कारण चुनाव अभियान से जुडे प्रचार को द्रुत गति मिली। इस बात बहुत बडा बदलाव इसमें देखा गया कि चुनाव अभियान की रणनीति तैयार करने के लिए पेशेवरों की नियुक्ति। मौजूदा चुनाव में यह भी देखा गया कि तमाम नेताओं ने सरकार बनाने की सूरत में जनहित के काम गिनाने की बजाए एक –दूसरे की आलोचना करना ज्यादा पंसद किया। उन्होनें अपनी ऊर्जा नकारात्मक चुनाव अभियान में खर्च की। व्यक्तिगत आरोप–प्रत्यारोप के साथ–साथ उन्होनें एक–दूसरे के परिजनों पर भी निशाना साधा।[18] चुनाव आयोग ने लोकतंत्र की मजबूती के लिए पांच बडे प्रयास किये गये। पहला ईवीएम का इस्तेमाल धांधली रोकने और मतगणना को आसान बनाने के लिए संसद ने 1988 मे जनप्रतिनिधि कानून में धारा –61ए शामिल की गयी, जिससे ईवीएम के साथ वी वी पैट इस्तेमाल का रास्ता साफ हुआ। दूसरा जुलाई 2013 मे सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि आपराधिक मामलों में दोषी करार और कम से कम दो साल सजा पाए सांसद– विधायक तत्काल प्रभाव से अयोग्य हो जाएॅगें। तीसरा सितम्बर 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को मतपत्रों /ईवीएम मे नोटा

(उपरोक्त में से कोई नहीं) विकल्प उपलब्ध कराने का आदेश दिया। 2013 मे पहली बार छत्तीसगढ़, मिजोरम, राजस्थान और मध्य प्रदेश में हुए विधानसभा चुनावों में नांटो बटन के इस्तेमाल का विकल्प दिया गया था। चौथा सितम्बर 2018 मे सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि चुनाव लड़ रहे सभी प्रत्याशियों को अपने खिलाफ चल रहे आपराधिक मामलों और देनदारियों की जानकारी अखबारों –टीवी चैनलों मे तीन बार विज्ञापन देकर बतानी होगी। पांचवा भारतीय निर्वाचन आयोग ने धन–बल के प्रयोग पर लगाम को प्रत्याशियों के लिए चुनाव खर्च की सीमा तय कर रखी है। बडे राज्यों में लोकसभा चुनाव में खर्च सीमा 70 लाख रूपये निर्धारित की गयी है, जबकि छोटे प्रदेशों में यह 54 लाख रूपये है।[19]

निःसन्देह प्रस्तुत अध्ययन मतदाताकी राजनीतिक संस्कषति को समझने का एक प्रयास है।

उद्देश्य

1. सर्वप्रथम उद्देश्य स्थानीय लोगों में उनकी राजनीतिक जागरूकता को जानना है।
2 मतदाता का व्यवहार मतदान के लिए कैसे प्रभावित होता है, का अध्ययन करना।
3 प्रथम बार मतदान में भाग लेने वाले मतदाताओं का व्यवहार तथा उनकी अभिप्रेरणाऍं क्या रहती हैं तथा मतदान का निर्णय किन बातों से प्रभावित होता है, का अध्ययन करना।
4 स्थानीय राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में मीडिया की भूमिका को समझना।
5 स्थानीय लोगों का अपने क्षेत्र के नेताओं व उनके कार्यो के ज्ञान के बारे में अध्ययन करना है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध पत्र में अन्वेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। स्थानीय राजनीतिक संस्कृति को जानने के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटे गाजियाबाद के साहिबाबाद विधानसभा क्षेत्र का अध्ययन किया गया। इस विधानसभा क्षेत्र में कुल मतदाता 865641 ;2017 जिसमें पुरूष 495665, महिला 369586 तथा अन्य 24 है। यहां की औसतन साक्षरता दर 73.08 प्रतिशत है जिसमें कि पुरूष साक्षरता 81.54 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 62.26 प्रतिशत है। दैव निदेर्शन पद्धति की लॉटरी प्रणाली द्वारा 2 बूथ के मतदाताओं का चुनाव किया गया। तत्पश्चात् उत्तरदाताओं के साथ विश्वसनीयता व सहजता बनाये रखने के लिए स्वयं चयनित निर्देशन के आधार पर साक्षात्कार अनुसूची पूर्ण की गयी।

तथ्यों का संकलन वर्गीकरण व सारणीयन

अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए, तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक व द्वितीयन स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया, जिसमें अपने अध्ययन के उद्देश्य व विषय को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से स्थानीय राजनीतिक संस्कृति को जानने का प्रयास किया गया। साथ ही साथ आवश्यकतानुार तथ्य संकलन के द्वितीय स्रोत के रूप में संबंधित साहित्य, सन्दर्भ ग्रन्थ, समाचार–

पत्र, पत्रिकाओं, नैट व संबन्धित कार्यालयों से आंकड़ों को प्राप्त किया गया।

विश्लेषण व निष्कर्ष

सारणी नं0–1 से 5 तक सामान्य जानकारी लेने का प्रयास किया गया है, जिसमें उत्तरदाता की आयु–संरचना, धर्म, जाति, शैक्षिक स्तर, आर्थिक स्थिति जानने का प्रयास किया गया है। क्योंकि यह सभी व्यक्ति के सोचने– समझने व स्थिति का विश्लेषण में सहायक होती है।

तालिका नं0–1

(मतदाताओं का आयु स्तर)

आयु– संरचना	आवृत्ति	प्रतिशत
30 वर्ष से कम	52	43.33
31 से 45 वर्ष	27	22.05
46 से 60 वर्ष	26	21.67
60 वर्ष से अधिक	15	12.5
योग	120	100

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक मतदाता युवा रहे जो कि 30 वर्ष से कम आयु के थे। 22.5 प्रतिशत उत्तरदाता 31 से 45 वर्ष आयु समूह तथा 21.67 प्रतिशत उत्तरदाता 46 से 60 वर्ष की आयु समूह के थे तथा सबसे कम उत्तरदाता 12.5 प्रतिशत 60 वर्ष से अधिक के लोग थे।

तालिका नं0–2

शैक्षिक स्तर

शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
इण्टरमीडिएट	51	42.5
स्नातक	40	33.33
परास्नातक	10	8.33
अन्य	19	15.84
योग	120	100

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (42.5 प्रतिशत) इण्टरमीडिएट थे। 33.33 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक थे। 15.84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य किसी प्रकार की तकनीकी शिक्षा जैसे आई टी आई, डिप्लोमा आदि किया हुआ था। सबसे कम उत्तरदाता 8.33 प्रतिशत परास्नातक रहे।

तालिका नं0–3

जाति संरचना

जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
सामान्य	39	32.5
अ0पि0जाति	72	60
अनु0जाति / जनजाति	09	7.5
योग	120	100

तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता अन्य पिछडी जाति से सम्बन्धित थे जो कि 60 प्रतिशत थे। 32.5 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य जाति तथा 7.5 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति के थे।

तालिका नं0–4

धार्मिक संरचना

धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
हिन्दू	109	90.83
मुस्लिम	11	9.17
सिख	00	00
अन्य	00	00
योग	120	100

सर्वाधिक उत्तरदाता हिन्दू थे जो कि 90.83 प्रतिशत थे तथा इसके बाद मुस्लिम जो कि 9.17 प्रतिशत रहे। इसके अतिरिक्त सिख तथा अन्य किसी और धर्म को मानने वाले नहीं थे।

तालिका नं0–5

आर्थिक स्थिति

आय (मासिक)	आवृत्ति	प्रतिशत
10000 रू0 से कम	88	73.33
10000 से 30000 रू0 तक	21	17.5
30000 से 40000 रू0 तक	11	9.17
50000 रू0 से अधिक	–	–
योग	120	100

सर्वाधिक उत्तरदाता अर्थात् 73.33 प्रतिशत की मासिक आय 10000 रू0 तक थी, क्योंकि अधिकांश इस क्षेत्र में छोटे मजदूर हैं अथवा छोटे दुकानदार है। 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता की मासिक आय 10000 से 30000 रू0 तक की है तथा 30000 से 40000 रू0 तक आय वाले मात्र 9.17 प्रतिशत ही उत्तरदाता रहे।

तालिका नं0–6

केन्द्र सरकार के दल की जानकारी

उत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	120	100
न्हीं	00	00
योग	120	100

राजनीतिक जागरूकता के लिए प्रश्न पूछने पर पूर्ण सकारात्मक इसका प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ। सभी उत्तरदाता यह जानते थे वर्तमान मे केन्द्र में भारतीय जनता दल की सरकार है।

तालिका नं0–7

महत्वपूर्ण पदों पर आसीन व्यक्यिों की जानकारी

पद	हॉ		नहीं		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
प्रधानमंत्री	120	100	–	–	120	100
राष्ट्रपति	85	70.83	35	29.17	120	100
मुख्यमंत्री	120	100	–	–	120	100
राज्यपाल	65	54.16	55	45.84	120	100

अपने देश व प्रदेश में महत्वपूर्ण पदो पर कार्यरत विभिन्न राजनीतिज्ञों के बारे में पूछा जाने पर ज्ञात हुआ किसी सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाता देश के प्रधानमंत्री तथा अपने प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम तथा सम्बन्धित दल के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हैं किन्तु वही राष्ट्रपति का नाम जानने पर केवल 70.83 प्रतिशत ही उत्तरदाता अपने देश के राष्ट्रपति का सही नाम बता पाये तथा मात्र 54.16 प्रतिशत उत्तरदाता अपने प्रदेश के राज्यपाल के नाम को जानते थे।

तालिका नं0–8

मतदान का निर्णय

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वयं	101	84.17
परिवार के कहने पर	13	10.83
अन्य	06	05

लोकतंत्र की आधारशिला ही मतदान है तथा मतदान किसे करना है इसका निर्णय बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। अतः यह जानने के लिए जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि उन्हें मतदान किसे करना तो 84.17 प्रतिशत का कहना था कि वह स्वयं अपनी सूझबुझ से व जिस व्यक्ति व दल से प्रभावित होते हैं, निर्णय करते हैं, वही 10.83 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अपने परिवार या बडे लोगों के कहने पर वह किसी विशिष्ट व्यक्ति या दल को मतदान करते है

तथा 5 प्रतिशत ने माना कि मतदान का निर्णय वह अपने साथियों, दोस्तों के प्रभाव में आकर करते है।

तालिका नं0–9

प्रथम बार मतदान

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	24	20
नहीं	96	80

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन करते समय 20 प्रतिशत मतदाता ऐसे थे जिन्होनें कि इस लोकसभा के चुनावों मे प्रथम बार मतदान किया तथा 80 प्रतिशत इससे पहले भी विभिन्न चुनावों मे अपने मतदान का प्रयोग कर चुके थे।

तालिका नं0–10

मतदान को प्रभावित करने वाले कारक

आधार	आवृत्ति	प्रतिशत
सोशल मीडिया	29	24.16
प्रत्याशी	42	35
घोषणा –पत्र	12	10
छल	15	12.5
धर्म व जाति	22	18.34
योग	120	100

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन करते समय 20 प्रतिशत मतदाता ऐसे थे जिन्होनें कि इस लोकसभा के चुनावों मे प्रथम बार मतदान किया तथा 80 प्रतिशत इससे पहले भी विभिन्न चुनावों मे अपने मतदान का प्रयोग कर चुके थे।

तालिका नं0–10

मतदान को प्रभावित करने वाले कारक

आधार	आवृत्ति	प्रतिशत
सोशल मीडिया	29	24.16
प्रत्याशी	42	35
घोषणा –पत्र	12	10
छल	15	12.5
धर्म व जाति	22	18.34
योग	120	100

प्रस्तुत तालिका प्रदर्शित करती है कि मतदान के लिए मतदाता कैसे प्रभावित होता है। 24.16 प्रतिशत मतदाताओं का मानना था कि सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, वॉटसएप के माध्यम से उन्हें विभिन्न दलों व प्रत्याशियों के कार्यो की जानकारी को आधार मानकर वह किसी विशिष्ट प्रत्याशी के लिए मतदान करते है। वही सर्वाधिक मतदाता (35 प्रतिशत) मानते है कि उनके क्षेत्र के प्रत्याशी से प्रभावित होकर उन्होने अपने मत का प्रयोग किया। मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाता मतदान के लिए विभिन्न दलों के घोषणा– पत्रों पर ध्यान देते है। 12.5 प्रतिशत मतदाता किसी विशिष्ट दल से प्रभावित है अतः वह दल के आधार पर अपने मत का प्रयोग करते हैं, वही 18. 34 मतदाता मानते है कि वह अपने धर्म व जाति वालो का ही मतदान करना पसन्द करते है।

तालिका नं0–11

विभिन्न दलों से सम्बन्धित उत्तरदाता

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	08	6.66
न्हीं	112	93.34
योग	120	100

तालिका से स्पष्ट है कि मात्र 6.66 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है कि वह किसी विशिष्ट दल से सम्बन्धित है, क्योंकि उनके परिवार के सदस्य, या जानने वाला या कोई सम्बन्धी चुनावों में प्रतिभाग कर रहा था। ऐसी स्थिति मे उनकी स्थिति अपने जानने वालों को समर्थन देने तथा उसको प्रचार करने की रही। 93.34 प्रतिशत उत्तरदाता चुनावों के समय किसी भी दल या प्रत्याशी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित नही थे।

तालिका नं0–12

निश्चित दल के समर्थक

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	22	18.33
न्हीं	98	81.67
योग	120	100

तालिका से स्पष्ट है कि 81.67 प्रतिशत उत्तरदाता किसी निश्चित दल के समर्थक नही थे। वह विभिन्न चुनावों के समय समयानुसार व अपने विवेक से विभिन्न दलों व प्रत्याशियों को मतदान करते रहते हैं अर्थात् किसी निश्चित दल को ही हर बार मतदान नहीं करते। वही 18.33 मतदाताओं ने माना कि वह किसी निश्चित दल के समर्थक है तथा विभिन्न चुनावों में एक ही दल को अपना समर्थन तथा मत देते है।

तालिका नं0–13

मतदान करने का कारण

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
मतदान कर्तव्य है	118	98.33
सगे –सम्बन्धियों को जीताना है	02	1.67
दल–विशेष के लोग प्रभावित करते है।	00	00
योग	120	00

प्रस्तुत तालिका मे उत्तरदाताओं से मतदान का कारण पूछा गया तो 98.33 प्रतिशत ने माना कि लोकतन्त्र मे अपना मतदान करना उनका एक राजनैतिक कर्तव्य है तथा देश के जिम्मेदार नागरिक होने के कारण यह उनकी डयूटी है कि वह अपने मतदान का प्रयोग अवश्य करें तथा सभी को करना चाहिए। वही 1.67 प्रतिशत मतदाता मानते है कि चुनावों मे उनके सगे –सम्बन्धी रहते है तो उन्हें जीताने के लिए वह मतदान करते है। किसी भी उत्तरदाता ने यह स्वीकार नहीं किया कि चुनावों के समय किसी तरह का प्रलोभन व दल–विशेष के लोग उन्हें प्रभावित करते है इसलिए वह मतदान करते है।

तालिका नं0–14

चुनावी घोषणा–पत्र के बारे में जानकारी

प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	34	28.33
नहीं	86	81.67
योग	120	100

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि मात्र 28.33 प्रतिशत उत्तरदाता चुनावों के समय विभिनन दलों द्वारा घोषित चुनावी घोषणा –पत्रों की वह जानकारी रखते है तथा कहीं न कही अपने मतदान के प्रयोग के समय उससे वह प्रभावित भी होते है। किन्तु 71.67 प्रतिशत मतदाता चुनावी घोषणा –पत्र जैसे आवश्यक प्रपत्र के बारे में कोई जानकारी नहीं रखते।

तालिका नं0–15

सरकार की गतिविधियों की जानकारी के साधन

साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
अखबार	31	25.83
दूसरों से सुनना	13	10.84
सोशल मीडिया	29	24.16
टी0 वी0 द्वारा	47	39.17
योग	120	100

देश तथा प्रदेश की सरकार की गतिविधियों व कार्यो की जानकारी के साधन के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि सर्वाधिक उत्तरदाता 39.17 प्रतिशत यह मानते है कि टी0 वी0 तथा विभिन्न समाचारों के चैनलो द्वारा उन्हें सरकार के कार्यो व उपलब्धियों की जानकारी मिलती है तथा विभिन्न चैनलों पर दिखायी जाने वाले सरकार की नीतियों पर कार्यो की बहस पर यह उत्तरदाता पूरी नजर रखते है। सबसे कम (10.84 प्रतिशत) उत्तरदाता यह मानते है दूसरों लोगों से सुनकर तथा वार्तालाप करके उन्हें सरकारी नीतियों तथा विभिन्न दलों के कायो की जानकारी प्राप्त होती है। 25.83 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वह अखबारों के माध्यम से अपने देश व क्षेत्र में सरकारी उपलब्धियों के बारे मे जानते है, 24.16 प्रतिशत उत्तरदाताओं कीं जानकारी का स्रोत सोशल मीडिया है और इस समूह मे सर्वाधिक युवा मतदाता थे।

निष्कर्ष तथा सुझाव

साहिबाबाद विधानसभा क्षेत्र मे राजनीतिक संस्कृति के अध्ययन से संबंधित उपर्युक्त पूर्ण विश्लेषण के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि सभी उत्तरदाताओं को अपने महत्वपूर्ण पदों पर आसीत विभिन्न राजनीतिज्ञों व दलों की जानकारी है किन्तु राष्ट्रपति तथा राज्यपाल के बारे में वह कम जानकारी रखते है क्योंकि उनके चुनावों व कार्यो से जनसाधारण प्रत्यक्ष रूप से जुडा नहीं है। क्षेत्र के लोग अपनी राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग है तथा मतदान में भाग लेना वह अपना नागरिक कर्तव्य व जिम्मेदारी मानते हैं, क्योंकि वह मानते कि चुनावों द्वारा सरकारों के बदलने से उनके सामान्य जीवन व देश के विकास का सीधा सम्बन्ध है। अपने राजनीतिक व नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के कारण वह मतदान स्वयं अपने विवेक के आधार पर दल व प्रत्याशी का चुनाव करते है। अपने क्षेत्र की नेताओं व विभिन्न दलों के कार्यो की पद्धति व उपलब्धियों के बारे में जानकारी का वर्तमान उभरता स्रोत सोशल मीडिया है तथा युवा व प्रथम मतदाता सबसे अधिक सोशल मीडिया से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ही विश्लेषण करना पसन्द करता है। दैनिक समाचार पत्र द्वारा भी इसकी पुष्टि की गयी जिसमें कहा गया कि दो लाख ग्रुप बने भाजपा की ताकत तथा टिवटर फेसबुक नहीं, इस बार व्हाट्सएप बना भाजपा का सबसे बडा हथियार तथा सोशल मीडिया ने चुनाव प्रचार को नया रंग दिया तथा पहली बार के वोटरों को बूथ तक खींचने में कामयाब रही, सोशल साइट, फेक न्यूज बेलगाम रही।[20] यह प्रदर्शित करती है कि वर्तमानमें राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में सोशल मीडिया की अहम् भूमिका रही। अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि कुछ मतदाता स्वयं ही किसी न किसी दल से प्रभावित थे तथा वह निश्चित दल के ही समर्थक थे, क्योंकि वह उसकी नीतियों तथा कार्यो से प्रभावित रहे है। राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में चुनावी घोषणा पत्रों की भी अहम भूमिका रहती है क्योंकि यह घोषणा –पत्र देश की नीति व विभिन्न दलों के कार्यो को प्रदर्शित करते है, हालाकि चुनावी घोषणा –पत्रों के बारे में जानकारी सभी मतदाता नहीं रखते। कुछ मतदाता अपने धर्म व जाति के आधार पर भी मतदान करते है जो कि यह प्रदर्शित करता है कि धर्म व जाति देश के चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है साथ ही वह भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। विभिन्न दलों के कार्यो व नीतियों से अलग व्यक्ति अपने सगे व सम्बन्धियों को भी चुनाव जीताने में मदद करने

के लिए मतदान करते हैं तथा बातचीत के माध्यम से दूसरों को भी प्रभावित करते है। चुनाव प्रचार के दौरान मतदाताओं को प्रलोभन देने से रोकने के लिए चुनाव आयोग द्वारा स्पष्ट निर्देश दिये जाते है किन्तु फिर भी ग्रास–रूट लेवल से बात करने पर पता चलता है कि स्थानीय लोगों को चोरी –छिप प्रलोभन दिये जाते है। इस क्षेत्र के लोगों को अपने राजनैतिक अधिकार के प्रति जागरूकता तो है किन्तु यहां विकसित राजनीतिक संस्कृति धर्म जाति तथा अपने सम्बन्धियों से प्रेरित रही जो कि लोकतन्त्र के लिए स्वस्थ संकेत नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया द्वारा पक्षपात रहित राजनैतिक विचारों का प्रचार होना चाहिए तथा सोशल मीडिया पर प्रचलित विचारों को लोगों को पहले तर्क व चिन्तन के आधार पर ही स्वीकार करें। युवा वर्ग, विशेषकर प्रथम बार मतदान करने वालोंको अफवाह इत्यादि पर ध्यान न देकर पूर्ण सर्तकता के साथ अपने बहुमूल्य मत का प्रयोग करना चाहिए, तभी एक सकारात्मक तथा लोकतन्त्र को मजबूत करने वाली राजनीतिक संस्कृति का निर्माण हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 बोगार्ड्स ई0 एस0, *''सोशियोलॉजी''* मैकमिलन कम्पनी न्यूयार्क, 1950, पृ0 –95

2 हर्शकोविट्स एम0 जे0, *''मैन एण्ड हिज वर्क्स'',* अल्फ्रेड ए0नूफ, न्यूयार्क, 1956, पृ0 –17

3 बैनेडिक्ट रूथ, *''पैटर्नस् ऑफ कल्चर,''* रूटलैग एण्ड कीजल पॉल, लन्दन, 1904, पृ0 –47

4 क्रोबर व क्लहकहॉन, *'कल्चर : ए क्रिटीकल रिव्यू ऑफ कानसेप्ट एण्ड डेफीनेशन,'* हॉवर्ड यूनिवर्सिटी म्यूजियम, कैम्ब्रिज, 1952, पृ0 –181

5 गावा ओ0पी0, *'विश्वकोष राजनीति विज्ञान'* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली , 2002, पृ0 –198

6 गैब्रियल आमण्ड, *'कम्पेरिट पोलिटिक्ल सिस्टम',* द जर्नल ऑफ पोलिटिक्स 18, नं0–3 (1956) : पृ0 391– 409

7 वर्मा एस0पी0, *आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त,* विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998 पृ0 –293

8 वर्मा श्यामलाल, समकालीन राजनीतिक चिन्तन एवं विश्लेषण सोहन प्रिंटिंग सर्विस, दिल्ली, पृ0 440

9 लूशियन डब्ल्यू0पाई, पोलिटिकल कल्चर एण्ड पोलिटिकल डवलपमैंट, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996, पृ0 513

10 शर्मा प्रभुदत्त, अभिनव राजनीतिक चिन्तन, 1197, पृ0 162

11 वही पृ0 163

12 डा0 ललिता, *राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा : एक ग्रामीण समालोचनात्मक अध्ययन,* अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पृ0 27

13 शर्मा डा0 प्रभा, भारतीय राजनीति मे महिलाओं की सहभागिता एवं शक्तीकरण, राधा कमल मुखर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 17 अंक 2 जु0 दि0, 2015 पृ0 72– 75

14 डा0 ललिता, वही पृ0 165

15 सिंह उदयभान, व मौर्या लवली, *पंचायती राज संस्थाओं मे महिला सहभागिता व जागरुकता,* राधाकमल मंखर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 17 अंक 2, जु0 दि 2015, पृ0 46–49

16 शीर्षक 'लोकसभा चुनाव मे रिकॉर्ड 67.11 प्रतिशत वोटिंग : हिन्दूस्तान, 21 मई 2019, पृ0 2

17 शीर्षक '*सबसे बडी सैन्य तैनाती का रिकार्ड बना*, हिन्दूस्तान, 21 मई 2019, पृ0 2

18 शीर्षक *'मुददों से ज्यादा प्रचार पर भरोसा*, हिन्दूस्तान, 21 मई 2019, पृ0 12

19 शीर्षक *'लोकतन्त्र की मजबूती के लिए पांच बडे प्रयास,* हिन्दूस्तान, 18 मई 2019, पृ0 13

20 शीर्षक '*दो लाख ग्रुप बने भाजपा की ताकत',* अमर उजाला, 21 मई 2019, पृ0 15